

## विश्व बैंक की सफलताओं और विफलताओं पर टिप्पणी करें।

Ans. विश्व बैंक की उपलब्धियाँ विश्व बैंक की प्रमुख उपलब्धियाँ (सफलतायें) निम्नलिखित हैं:

(1) ऋण का वितरण: विगत वर्षों में विश्व बैंक के कार्य क्षेत्र का बहुत अधिक विस्तार हुआ है, जिसके फलस्वरूप उसके लिये बड़ी मात्रा में ऋण प्रदान करना या कराना सम्भव हो सका है। 30 जून, 1980 तक विश्व बैंक ने 110 सदस्य देशों को विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए 63 विलियन डॉलर की ऋण सहायता प्रदान की। बैंक ऋण प्रदान करने में उदार नीति का पालन करता है।

(2) ऋण का क्षेत्र विश्व बैंक विद्युत शक्ति, परिवहन और संचार के साधनों के विकासार्थ अल्पविकसित देशों के लिए ऋण की व्यवस्था करके उनके लिए आर्थिक विकास को सम्भव बनाता है। 1968-1969 से विश्व बैंक ने इन देशों को कृषि विकास, शिक्षा एवं परिवार नियोजन आदि कार्यों के लिए भी ऋण देना प्रारम्भ कर दिया है। विश्व बैंक द्वारा स्वीकृत ऋण सहायता का बहुत बड़ा भाग एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी और मध्य अमेरिका के पिछड़े हुए देशों को प्राप्त हुआ है। विश्व बैंक ऋण की राशि का आकलन उसकी विकास योजनाओं को ध्यान में रख कर करता है।

(3) कार्यशील पूँजी का विस्तार: बैंक ने समय-समय पर अमेरिका, ब्रिटेन, स्विटजरलैंड, आदि देशों में अपनी प्रतिभूतियाँ बेचकर पूँजी बढ़ाने का प्रयास किया है। विश्व बैंक द्वारा कुछ ऋण तेल-निर्यातक देशों से भी प्राप्त किए गए हैं। वित्तीय साधनों की न्यूनता को समाप्त करने के उद्देश्य से बैंक ने अनेक बार सदस्य देशों के अभ्यंशों में वृद्धि की है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ की स्थापना: विश्व बैंक ने 1956 में अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम की तथा 1960 में अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ की स्थापना में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। इन दोनों अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की स्थापना हो जाने से विश्व के अर्धविकसित देशों के निजी

एवं सार्वजनिक क्षेत्रीय संस्थाओं को बड़ी मात्रा में दीर्घ कालीन ऋण सहायता प्राप्त हो सकी है।

(5) तकनीकी सहायता एवं परामर्श: प्रत्यक्ष एवं परोक्ष वित्तीय सहायता के अतिरिक्त विश्व बैंक सदस्य देशों को तकनीकी सहायता भी प्रदान करता है। विश्व बैंक द्वारा चालू की गई विकास-संबंधी "परामर्श सेवा के अन्तर्गत बैंक के विशेषज्ञ सदस्य देशों की सरकारों को विकास परियोजनाओं का चयन करने में सहायता देते हैं तथा विकास परियोजनाओं के वित्तीय वैज्ञानिक, तकनीकी तथा दूसरे पहलुओं के बारे में उचित परामर्श देते हैं। विश्व बैंक द्वारा स्थापित "आर्थिक विकास संस्थान, सदस्य देशों के वरिष्ठ अधिकारियों को अल्पकालीन प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

(6) आर्थिक अध्ययन: विविध प्रकार की सहायता के अतिरिक्त बैंक आर्थिक विकास संबंधी सामान्य हित की समस्याओं का भी अध्ययन करता है और उन्हें प्रकाशित करता है।

(7) सदस्य देशों के आपसी विवादों में मध्यस्थता: अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं सुलझाने में विश्व बैंक ने समय-समय पर मध्यस्थता का काम करके विश्व शान्ति की स्थापना में सहयोग दिया है।

(8) ऋणदाता देशों की बैठकों का आयोजन: विकासशील देशों को अधिकाधिक वित्तीय सहायता दिलाने के उद्देश्य से भारत सहायता क्लब, तथा पाकिस्तान सहायता क्लब की स्थापना विश्व बैंक के प्रयासों का ही फल है।

विश्व बैंक की खामियाँ: विश्व बैंक के कार्यों और नीतियों की निम्न आधार पर आलोचना की जाती है:

(1) अपर्याप्त वित्तीय साधन: बैंक केवल विशिष्ट परियोजनाओं के लिए ही ऋण सहायता देता है तथा यह सहायता भी परियोजना की विदेशी विनिमय संबंधी आवश्यकता तक सीमित रहती है। क्योंकि विकासशील सदस्य देशों की विस्तृत

आवश्यकताओं को देखते हुए विश्व बैंक की पूँजी तथा अन्य वित्तीय साधन अपर्याप्त हैं।

(2) पक्षपातपूर्ण व्यवहार विश्व बैंक के निर्णयों पर अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोप के देशों का प्रभुत्व बना रहता है। इस कारण से यद्यपि सामूहिक रूप में एशियाई और अफ्रीका के देशों का क्षेत्रफल, जनसंख्या अप्रयुक्त अथवा अल्पप्रयुक्त साधन यूरोप तथा लैटिन अमेरिका की तुलना में कहीं अधिक और विस्तृत हैं, तथापि विश्व बैंक से यूरोपीय तथा लैटिन अमेरिकी देशों को ही अधिक वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है।

(3) व्याज की ऊँची दर और कमीशन: निर्धन देशों की आर्थिक स्थिति तथा भुगतान सामर्थ्य को देखते हुए विश्व बैंक द्वारा प्रदत्त ऋण पर्याप्त मँहगे सिद्ध होते हैं। विश्व बैंक सदस्य देशों को प्रदत्त ऋणों पर अनुचित कमीशन वसूल करता है।

(4) विकासशील देशों के लिए ऋण पाने में कठिनाइयाँ: अल्पविकसित देशों को विश्व बैंक से ऋण पाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(a) बैंक ऋण स्वीकृत करने से पूर्व ऋणकर्ता देश की अदायगी क्षमता की जाँच करता है।

(b) बैंक विकासशील देशों को केवल सुनिश्चित उत्पादक और अत्यावश्यक परियोजनाओं के लिए ही ऋण स्वीकृत करता है।

(c) बैंक ऋण वापसी की यह शर्त कि जिस मुद्रा में ऋण लिया गया है उसी में लौटाया जाये, अल्पविकसित देशों के लिए बहुत भारी पड़ता है।

(d) बैंक शेयर पूँजी के लिए ऋण नहीं देता तथा सार्वजनिक उपयोगिता की परियोजनाओं के लिए निजी विनियोक्ताओं से ऋण दिलाता है।

(5) उद्योगों के लिए कम ऋण: विश्व बैंक अल्पविकसित देशों को अधिकांश ऋण कृषि और संबंधित कार्यों के लिए ही देता है, भारी और मूलभूत उद्योगों अथवा शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और गृह-निर्माण सरीखे सामान्य विकास के कार्यों के

लिए नहीं। फलतः इन देशों का तीव्र गति से आर्थिक विकास सम्भव नहीं हो पाया है।

भारत और विश्व बैंक: भारत विश्व बैंक के संस्थापक सदस्यों में से एक है। 1977 तक भारत सबसे बड़े प्रथम पाँच अंशधारियों में से एक था और इस कारण उसे बैंक के कार्यकारी निदेशक मण्डल में स्थान प्राप्त था, अब उसका स्थान जापान ने ले लिया है। विश्व बैंक भारत के लिए वित्तीय सहायता का शावत स्रोत है। जब से भारत ने अपनी पंचवर्षीय योजनाओं का प्रारम्भ किया है तभी से वह बैंक विशेषज्ञों को आमन्त्रित करता रहता है। लगभग प्रति वर्ष बैंक का एक मिशन भारत आता है जो यहाँ की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करता है, हमारी वित्तीय आवश्यकताओं का अनुमान लगाता है तथा हमारी योजनाओं की क्षमता की जानकारी करता रहता है।